# भाव्यवाद

**Veemmi Rani***

Research Scholar

***सार - महाभारत में नियति या भाग्य के अस्तित्व को दैव इच्छा के परिप्रेक्ष्य में स्वीकारा गया है। महाभारत में कहा गया है कि "यदि कभी कोई पुरुषार्थ सफल होता दिखाई देता है तो वहाँ भी खोज करने पर दैव का ही सहयोग सिद्ध होता है"***[ 40]

----------X----------

महाभारत कार के अनुसार व्यक्ति के पुरुषार्थ का फल तब तक नहीं मिलता जब तक नियति या भाग्य में वह फल नहीं बदा हो। मनुष्य के प्रारब्ध के विधान से ही जो कुछ पाना है, उसी को वह पाता है। जहाँ जाना है, वहीं वह जाता है और जो भी सुख या दुःख उसके लिए प्राप्तव्य है, उन्हें वह प्राप्त करता है। 41 अतः स्पष्ट है कि प्राचीन ग्रन्थों में भाग्य और प्रारब्ध के अस्तित्व को अतिशय व्यापकता के साथ स्वीकारा गया है।

गांधी जी भी भाग्य को मानते थे, तो इस अर्थ में कि मनुष्य का भाग्य कर्म से बंधा है। वह जिस नियति को भोग रहा है, वह पूर्व कर्मों का फल है। श्री नरेश मेहता लिखते हैं कि-

**क्या यही है मनुष्य का प्रारब्ध?**

**कि कर्म, निर्मम कर्म**

**केवल असंग कर्म ही करता चला जाए?[42]**

इसी प्रकार लक्ष्मीनारायण मिश्र अपने 'सेनापति कर्ण' में नियति नटी की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं। कुरुराज अपने भोग्य दोष से और पांडवों के भाग्य से, पांडवों की विजय निश्चित मानते है। सुयोधन का भी विश्वास है कि विधाता ने जो 'हीन भाल' में लिख दिया है, उस नियति चक्र को कोई नहीं मिटा सकता। इसीजिए कौरव भाग्य की सत्ता को स्वीकारते है-

**कहना ही होगा सखे! क्रूर कर्म रेखा की,**

**क्रूर दुर्दैव की विभीषिका जगत में**

**जलती निरंतर है।[43]**

मिश्र जी के अनुसार तो कर्म की रेखाओं के समक्ष पुरुषार्थ भी नतमस्तक है-

**कर्मरेख मिटती कभी क्या पुरुषार्थ से,**

**भाई अनुकूल पांडवों के भाग्य चक्र हैं,**

**हो रहा तभी तो हाय, देखो हीन बल में**

**.....**

**सहना पड़ेगा हमें भाग्य में लिखा है जो**

**निर्दय विधाता ने।[44]**

कविवर नरेन्द्र शर्मा द्वारा 'द्रौपदी' काव्य में नियति के अस्तित्व को स्वीकारा गया है। कवि की निम्न पंक्तियां नियति के प्रति उसकी आस्था को व्यक्त करती हैं-

**द्रौपदी जीवन शक्ति,**

**सौंप दी गई पांच तत्त्वों को।**

**या कहा नियति ने - पार्थ!**

**करो अब लुप्त सत्वों का।[45]**

यहां पर कवि भाग्य या होनी पर विश्वास तो करते हैं, लेकिन इसका अर्थ मनुष्य की अंकर्मण्यता को स्वीकार नहीं है। कवि के अनुसार द्रौपदी एक ऐसी शक्ति थी, जिसने पांडवों के पुरुषार्थ को जगाया। यदि वह भी भाग्य को स्वीकार करके बैठ जाती तो महाभारत के युद्ध में प्राप्त विजयश्री के पांडव अधिकारी नहीं होते।

केदारनाथ मिश्र प्रभात अपने काव्य 'राष्ट्रनायक' में पुरुषार्थ वंदना करते हैं।

उन्हें नियति के हाथों स्वयं को सौंप देना मंजूर नहीं-

**वह नहीं मानता है कि नियति ही सब कुछ है।**

**विश्वास अटल वह आत्मशक्ति में रखता है।**

**कर्तव्य लुभाता उसे धर्म उसको प्यारा**

**वह पौरुष की रणभेरी के स्वर पर तिरता**

**अनवंरत युद्ध करता प्रतिरोधी तत्त्वों से**

**वह वर्तमान को उलट नया युग लाता है।[46]**

एक तरफ जहाँ केदारनाथ मिश्र के राष्ट्रनायक पुरुषार्थ का हामी है, वहीं चांदमल अग्रवाल चन्द्र 'कैकेयी' में राज्याभिषेक के स्थान पर वनगमन के आदेश के पीछे, विधि के रहस्य को ही मानते हैं--

**'जाने क्या विधि रहस्य इसमें,**

**व्यर्थ न छोटा मन कीजै ।**

**दैव रचित यह स्यात परीक्षा।[47]**

राम विचार करते है कि राज्याभिषेक के स्थान पर अचानक वतगमन का मिलन दैव का कोई खास प्रयोजन, कार्य होगा।

**"पा राज्य अचानक खोरऊँ,**

**संभव कुछ दैव प्रयोजन।"[48]**

देवराज कष्त 'ईला और अमिताभ' काव्य में इला नियति को जीवन की घटनाओं के लिए उत्तरदायी ठहराती है। यदि नियति का खेल नहीं होता तो क्या उसका प्रेमी अमिताभ इला को और स्वयं की प्रेम करने के अपराध में समाज के समक्ष दोषी ठहराता, कवि के शब्दों में प्रस्तुत है-

**"नियति के असह्य क्रूर कदुतर प्रहार की**

**अंधियारी छाया में**

**घटनागत सत्य पूरा तुमने स्वीकार लिया**

**यानि मुझे और स्वयं अपने को**

**दुनिया के सामने चाचा, समाज का**

**अपराधी घोषित किया।[49]**

इस प्रकार कर्म और भाग्य पर स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कवियों ने विस्तार से विचार किया है और उन्हें परस्पर संलग्न माना है। इन कवियों के काव्य में गांधी दर्शन की छाप दृष्टिगोचर होती है। गांधी जी ईश्वरीय अनुग्रह को भी आवश्यक मानते थे।

भारतीय अध्यात्मदर्शन का मानना है कि पुनर्जन्म कर्मफल पर आधारित है। जीवात्मा को कर्मों के अनुसार ही योनि प्राप्त होती है। महात्मा गांधी जी भी पुनर्जन्म के सिद्धांत के प्रति आस्थावान थे। उन्होंने स्वयं कहा है," मैं पुनर्जन्म में उतना ही विश्वास रखता हूं, जितना वर्तमान शरीर के अस्तित्व में, इसलिए मैं जानता हूं कि थोड़ा-सा भी प्रयत्न व्यर्थ नहीं जायेगा" गांधी जी की तरह ही कुंवर-नारायण जी ने भी पुनर्जन्म में आस्था व्यक्त की है-

इस विनम्र से विशिष्ट

**एक और दुनिया है**

**केवल निर्माता की**

**जिसमें हम बार-बार नए जनम लेते हैं।**

**झठलाये जीवन को फिर साबित करते हैं**

**कोरे भविष्यों को संस्कार देते हैं।[51]**

गांधी जी की मान्यता थी कि मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार फल भोगना पड़ता है, चाहे कर्म पिछले जन्म के ही क्यों ,न हो। रामधारी सिंह दिनकर की 'उर्वशी' पूर्वजन्म के संचित कर्मो द्वारा व्यक्ति अच्छा या बुरा फल प्राप्त करता है, को व्यक्त करती है। ओशीनरी का पति अप्सरा उर्वशी के पाशमें आबद्ध है। ओशीनरी उर्वशी के इस कष्ट को अपने ही पूर्व जन्म को दोषी ठहराती है-

**जाने इस गणिका का मैंने कब क्या अहित किया था,**

**कब, किस पूर्वजन्म में उसका क्या सुख छीन लिया था,**

**जिसके कारण प्रभा हमारे महाराज की मति को,**

**छीन ले गई अथम पापिनी मुझसे मेरे पति को।[52]**

वस्तुतः व्यक्ति जब अकारण दुःख भोगता है तो इस जन्म के कार्यो को नहीं अपितु पूर्वजन्म के संचित दुष्कर्मों को दोष देता है, उन्हीं को वर्तमान दुःख का कारण मानता है। ओशीनरी ने यही कहा है।

पूर्वजन्म के सत्कार्यो के कारण ही विभीषण ने रावण के असुरी प्रभाव से स्वयं को बचा लिया था। प्रवाद पर्व में नरेंश मेहता प्रारब्ध की चर्चा करते हुए यह सिद्ध करना चाहते हैं कि बस भाग्य में जो लिखा है, उसे हर हालत में भोगना ही पड़ेगा। चाहे मनुष्य विधि के लेखों से बचनें के लिए किसी भी शताब्दी का चक्कर लगा ले, उनको भोगे बिना बच नहीं सकता।

कृतिकार के शब्दों में-----

मानवीय प्रारब्ध के ललाट पर

यह कैसा अग्नि त्रिपुण्ड लिख दिया गया है कि

चारों ओर

केवल स्वाहा ही स्वाहा की

आवाह वाणी

वनस्पत्तियों से लेकर व्यक्तियों तक

सुनाई दे रही है।

कहीं भी चले जाओ

किसी भी / गत आ आगत शताब्दी में

असंग या / स्मृतिहीन बनकर / यात्रा

प्रतियात्रा कर आओं / पर

कर्म के इस तटस्थ

भागवत-अनुष्ठान से

कोई मुक्ति नहीं

कोई निष्कृति नहीं [53]

इस प्रकार गांधी जी एक आध्यात्मिक पुरुष के रुप में सामने आए और उनके आध्यात्मिक पक्ष के तत्त्वों ईश्वर, आत्मा, जगत, ज्ञान, मोक्ष, कर्मवाद, भाग्यवाद और पुनर्जन्म आदि की अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता में दृष्टिगोचर होती है। गांधी जी हिन्दू धर्म के कट्टर भक्त थे, परन्तु भारत में व्याप्त कुरीतियों और कुसंस्कारों के विरोधी थे। वे गृहस्थ होकर भी सच्चे संत थे। उनकी आध्यात्मिक दार्शनिक विचारधारा अनुकरणीय है।

**सन्दर्भ**

महाभारतः शान्ति पर्व 177 /13

महाभारतः शान्तिपर्व, 266 /23

श्री नरेश मेहताः प्रवाद पर्व पृ० 19

लक्ष्मीनारायण मिश्र; सेनापति कर्ण: मन्त्रण पृ0 20

वही, पृष्ठ 28

नरेन्द्र शर्माय द्रौपदी: प्रथम सर्ग पृ0 27

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' राष्ट्र पुरुषः तृतीय सर्ग, पृ0 41

चांदमल अग्रवाल चन्द्रः कैकेयीः दशम सर्ग पृ0 113

चांदमल अग्रवाल चन्द्रय कैकेयीः द्वादश सर्ग पृष्ठ 127

देवराज: इला और अमिताभ; प्रवासः पर्व पृष्ठ 73

गांधी जी, यंग इण्डिया भाग-दो पृ0 120

कुंवरनारायण; आत्मजयी; पूर्वापर पृ० 56

रामधारी सिंह दिनकर; उर्वशी

डॉ0 गायत्री जोशी; हिन्दी प्रबंधों में जीवन दर्शन पृ० 244

नरेश मेहता; प्रवाद पर्व पृ० 23

**Corresponding Author**

**Veemmi Rani***

Research Scholar